5.3.3 The institution conducts /organizes following activities

during 2024-25

No. 21 Activities/ Events

1. Parent-Teacher Meeting
Date:- 28.03.2025

दिनांक 28.03.2025 को साहित्य एवं भाषा -अध्ययनशाला के कला भवन के सेमिनार सभाकक्ष में शिक्षक-अभिभावक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें विभाग के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के साथ उनके अभिभावक भी मौजूद रहे। इस बैठक में अभिभावकों ने अपने विचार भी साझा किए।

उक्त बैठक में विभाग की अध्यक्ष प्रो.शैल शर्मा, प्रो.मधुलता बारा, डॉ.गिरजाशंकर गौतम, डॉ. मृणालिनी करमोकर, डॉ.सोनल मिश्रा, डॉ. कौस्तुभमणि द्विवेदी, डॉ.कुमुदिनी घृतलहरे,डॉ.विभाषा मिश्र, डॉ.शारदा सिंह, डॉ. बरातू राम ध्रुव, डॉ.अभीप्सा पटेल, श्री मोहन बत्रा, सुश्री अमरी माखीजा आदि प्राध्यापकगण मौजूद रहे।

Parent-Teacher Meeting- 2024-25

2. मातृ–पितृ पूजन दिवस
दिनांक– 14.02.2025

दिनांक 14.02.2025 को कला भवन के लैंग्वेज लैब में साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला के समस्त विद्यार्थियों के द्वारा मातृ–पितृ पूजन दिवस का आयोजन किया गया। मां सरस्वती के छाया चित्र में माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। कार्यक्रम में छात्र–छात्राओं के माता–पिता उपस्थित रहे। छात्राओं द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति दी गई। विद्यार्थियों द्वारा विधि–विधान पूर्वक माता–पिता एवं गुरूजन को तिलक लगा कर पूजा की गयी। पालकों द्वारा विद्यार्थियों को सम्बोधित किया गया एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ दी गई। विद्यार्थियों ने अपने अनुभव साझा कर माता–पिता के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित किया। डॉ. मधुलता बारा ने जीवन में माता–पिता के महत्व पर प्रकाश डाला।

उक्त कार्यक्रम में प्रो. शैल शर्मा, डॉ. मधुलता बारा एवं समस्त अतिथि शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन गीतांजलि साहू, एम.ए.हिंदी चतुर्थ सेमेस्टर ने किया। कार्यक्रम पश्चात आभार ज्ञापन रौशनी ठाकुर, एम.ए. हिंदी द्वितीय सेमेस्टर ने किया।

मातृ–पितृ पूजन दिवस **2024-25**

3. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जयंती
दिनांक– 03.02.2025

आज दिनांक 03.02.2025 को साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला के पाणिनि सभाकक्ष में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की जयंती के उपलक्ष्य में छात्र-परिषद् (हिंदी) के द्वारा एक दिवसीय व्याख्यान आयोजित किया गया। 'निराला' के समग्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने प्रकाश डाला। निराला छायावाद युग के चार स्तंभों में से एक प्रमुख स्तंभ के रूप में माने जाते हैं। उनकी अनेक रचनाएँ प्रसिद्ध हैं जिनमें राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति, कुकुरमुत्ता जैसी रचनाएँ मुख्य रुप से प्रसिद्ध मानी जाती हैं। प्रो. शैल शर्मा अध्यक्ष साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला, ने निराला के साहित्यिक जीवन की चर्चा कर उनकी कविता 'वह तोड़ती पत्थर' का विशेष उल्लेख किया। डॉ. मधुलता बारा ने छायावाद की चर्चा करते हुए प्रगतिवाद एवं प्रयोगवादी रचनाओं को भी समझाया। डॉ. कौस्तुभमणि द्विवेदी ने निराला के व्यक्तिगत जीवन की चर्चा की। डॉ. कुमुदिनी घृतलहरे ने 'राम की शक्ति पूजा' की व्याख्या करते हुए राम के संघर्ष को निराला के व्यक्तिगत जीवन से जोड़कर बताया। डॉ. विभाषा मिश्र एवं डॉ. अभीप्सा पटेल ने निराला की कविता 'वरदे वीणा वादिनी वरदे' एवं 'भारत ही जीवन धन' कविता को अपने स्वर से लयबद्ध करके विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित किया। डॉ. बरातू राम धुरव ने निराला की कविता 'वह तोड़ती पत्थर' का उल्लेख कर अपने जीवन के करीब बताया। एम.ए. हिंदी द्वितीय सेमेस्टर की विद्यार्थी सस्मिता ने निराला की कविता 'भिक्षुक' का काव्य-पाठ किया इसी क्रम में शांता और रोशनी ने भी उनकी अन्य कविताओं को लयबद्ध किया। एम.ए. हिंदी चतुर्थ सेमेस्टर के छात्र रेशम लाल ने निराला का जीवन परिचय दिया। गीतांजलि, रवि, गौरव ने भी निराला के साहित्यिक अवदान और उसके महत्व को समझाया।

कार्यक्रम में प्रो. शैल शर्मा, प्रो. मधुलता बारा, डॉ. गिरजाशंकर गौतम, विभाग के समस्त अतिथि प्राध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अभीप्सा पटेल, सह समन्वयक एम.ए. हिंदी चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा वंदना शर्मा रहीं। कार्यक्रम का संचालन एम.ए. हिंदी चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा गीतांजलि ने एवं आभार प्रदर्शन एम.ए. हिंदी द्वितीय सेमेस्टर की छात्रा रोशनी ठाकुर ने किया।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' – जयंती **2024-25**

4. एकल व्याख्यान– विषय– वर्तमान समय में भारतीय भाषा की महत्ता
दिनांक– 14.12.2024

साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला पं. रविशंकर शुक्ल विश्विद्यालय रायपुर द्वारा एकल व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें सारस्वत वक्ता के रूप में प्रो. के. श्रीकुमार लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ उपस्थित रहे। उन्होनें अपने वक्तव्य में भारतीय भाषाओं की महत्ता पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए चामस्की के सिद्धांत और भारतीय भाषा के आधुनिकरण की प्रक्रिया के बारे में बताया है। उन्होनें कहा कि हमारा भारत बहुभाषी है जहाँ प्रत्येक राज्य कि अपनी-अपनी भाषा है। भाषा एक व्यवस्था है समाज में उनका भिन्न-भिन्न प्रयोग होता इसलिए भाषा स्थायित्व होता है और मानव मस्तिष्क में विद्मान रहती है तब वह मुख से उच्चरित होती है।

कार्यक्रम में प्रो. शैल शर्मा, अध्यक्ष, प्रो. मधुलता बारा, डॉ. गिरजाशंकर गौतम एवं शिक्षकगण तथा समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहे।

प्रो. के. श्रीकुमार, लखनऊ **2024-25**

5. भारतीय भाषा उत्सव (राष्ट्र कवि सुब्रमण्यम भारती जयंती उपलक्ष्य में) दिनांक– 11.12.2024

दिनांक 11.12.2024 को 'भारतीय भाषा उत्सव' का आयोजन राष्ट्र कवि सुब्रमण्यम भारती की जयंती के उपलक्ष्य में सरस्वती शिक्षण संस्थान छत्तीसगढ़ एवं साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय के प्रेक्षागृह में किया गया। 'समृद्ध भारतीय भाषाएँ और उनकी एकात्मता' विषय पर मुख्य अतिथि, विधानसभा अध्यक्ष, डॉ. रमन सिंह ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में कहा, भारतीय भाषा दिवस मनाने का निर्णय केंद्र सरकार ने लिया है। आजादी के आंदोलन में भाषा कोई बाधा नहीं बनी, पूरा देश एक उद्देश्य को लेकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ता रहा। छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद छत्तीसगढ़ी को राजभाषा बनाने का निर्णय लिया गया। इसके बाद विधानसभा और न्यायपालिका में छत्तीसगढ़ी का प्रयोग किया जा रहा है। प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा दी जा रही है। प्रदेश में गोंडी, हलबी, भतरी जैसी समृद्ध बोलियाँ प्रचलित है।

मुख्य वक्ता डॉ. पूर्णेंदु सक्सेना, चिंतक एवं विचारक ने अपने सम्बोधन में कहा कि भारत में संस्कृत भाषा सभी भाषाओं की जननी है, उनसे ही अनेक भाषाएँ विकसित हुई है। आज चाहे गोंडी बोली हो या तमिल, उनमें संस्कृत के ही धातु रूप मिलते हैं। वैदिक ज्ञान का जब बंगाल और तमिलनाडु में अध्ययन किया गया तो परिणामस्वरूप दोनों ही स्थानों में वैदिक ज्ञान एक ही निकला। इसका अर्थ है कि ज्ञान को संरक्षित रखने का सबसे वैज्ञानिक माध्यम संस्कृत भाषा रही है। हमारी भाषा का महत्व उसके व्याकरण नियमों में नहीं है, उनसे व्यक्त होने वाले भाव से है। उन्होंने कहा कि उत्तर और दक्षिण में भाषा का कोई भेद नहीं है। कुछ ताकतें भाषा के माध्यम से समाज को तोड़ने का काम कर रहीं हैं। भारत पहुंचे विदेशी लोगों ने भाषा का वर्गीकरण करने का प्रयास किया। साथ ही अपनी भाषा को श्रेष्ठ बताकर क्षेत्रीय स्तर पर भाषा परिवर्तन का कार्य प्रारंभ किया। उन्होंने कहा कि भाषा आदमी को आदमी से जोड़ने का काम करती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सच्चिदानंद शुक्ल ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. स्मिता शर्मा ने किया। अभार प्रदर्शन डॉ. गिरजा शंकर गौतम ने किया।

नगर से विभिन्न संस्थाओं से आमंत्रित कलाकारों ने भारतीय भाषाई एकता को दर्शाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रोमांचक प्रस्तुति दी। तत्पश्चात सरस्वती शिक्षण संस्थान समूह के सभी कलाकारों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। उक्त कार्यक्रम में प्रो. शैल शर्मा, अध्यक्ष, साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला, विश्वविद्यालय के प्राध्यापकगण, कर्मचारीगण, समस्त शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएँ बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि, विधानसभा अध्यक्ष, डॉ. रमन सिंह

आमंत्रण

मान्यवर,

भारतीय भाषा दिवस (11 दिसंबर), राष्ट्रकवि सुब्रमण्यम स्वामी की जयंती के उपलक्ष्य में **भारतीय भाषा उत्सव** का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर

समृद्ध भारतीय भाषाएँ और उनकी एकात्मता

विषय पर व्याख्यान आयोजित है।

कार्यक्रम

मुख्य अतिथि
डॉ. रमन सिंह
विधानसभा अध्यक्ष, छत्तीसगढ़

अध्यक्ष
डॉ. सच्चिदानंद शुक्ला
कुलपति, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय

मुख्य वक्ता
डॉ. पूर्णेंदु सक्सेना
चिन्तक एवं विचारक

के आतिथ्य में संपन्न होने जा रहा है।
इस अवसर पर आपकी गरिमामय उपस्थिति प्रार्थनीय है।

दिनांक – 11 दिसंबर 2024, बुधवार
समय - दोपहर 2.30 बजे
स्थान - पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय प्रेक्षागृह, रायपुर

निवेदक

कुलसचिव	**सचिव**
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय	**सरस्वती शिक्षण संस्थान**
रायपुर	**छत्तीसगढ़**

लाइव इवेंट

आजादी के आंदोलन में भाषा नहीं बनी बाधा, पूरा देश एक उद्देश्य लेकर लड़ी जंग

रायपुर। भारत में संस्कृत भाषा सभी भाषाओं की मूल है, उनसे ही अनेक भाषाएं विस्तारित होती गईं। आज चाहे गोंडी बोली हो या तमिल, उनमें संस्कृत के धातु शब्द मिलते हैं। वैदिक ज्ञान का जब बंगाल और तमिलनाडु में अध्ययन किया गया तो दोनों ही स्थानों में वैदिक ज्ञान एक ही निकला। इसका मतलब है कि संस्कृत में व्यक्त ज्ञान को संरक्षित रखने का सबसे वैज्ञानिक माध्यम है। बुधवार को रविवि में आयोजित व्याख्यान के मुख्य वक्ता [illegible] पूर्णेंदु सक्सेना ने [illegible] ने संबोधन में यह जानकारी दी। जिन्होंने कहा, भारत पहुंचे विदेशी लोगों ने भाषा का वर्गीकरण करने का प्रयास किया। साथ ही अपनी भाषा को श्रेष्ठ बताकर क्षेत्रीय स्तर पर भाषा परिवर्तन का कार्य प्रारंभ किया।

भाषा दिवस पर व्याख्यान का आयोजन

रविवि में 'भारतीय भाषा उत्सव' के दौरान व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सच्चिदानंद शुक्ल ने की एवं सरस्वती शिक्षण संस्थान के सचिव विवेक सक्सेना शामिल हुए। मुख्य अतिथि डॉ. रमन सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा, भारतीय भाषा दिवस मनाने का निर्णय केंद्र सरकार ने लिया है। आजादी के आंदोलन में भाषा कोई बाधा नहीं बनी, पूरा देश एक उद्देश्य को लेकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ता रहा। छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद छत्तीसगढ़ी को राजभाषा बनाने का निर्णय लिया गया था। इसके बाद विधानसभा और न्यायपालिका में छत्तीसगढ़ी का प्रयोग किया जा रहा है। प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा दी जा रही है। प्रदेश में गोंडी, हल्बी, भरथरी जैसी बोली सुनने को मिलती है।

6. छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस
दिनांक– 04.12.2024

दिनांक 04.12.2024 को साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला के द्वारा 'छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस' का आयोजन पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के प्रेक्षागृह में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद्मश्री श्री अनुज शर्मा, विधायक, धरसींवा विधानसभा (छ.ग.) रहें। विशिष्ट अतिथि ने कहा कि भाषा में निरंतर प्रवाह होना चाहिए। सरल, सहज छत्तीसगढ़ी भाषा का प्रयोग हमें आगे बढ़ाती है। उन्होंने छत्तीसगढ़ी सिनेमा में छत्तीसगढ़ी भाषा के प्रयोग और परिवेश के अनुभव को साझा करते हुए कहा कि, छत्तीसगढ़ी को मानकीकृत रूप देने में सिनेमा और फिल्मों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

विशिष्ट अतिथि अंतरराष्ट्रीय हास्य कवि पद्मश्री सुरेंद्र दुबे, पूर्व सचिव छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग ने कहा कि छत्तीसगढ़ी सशक्त भाषा है। इसे आठवीं अनुसूची में स्थान मिलना चाहिए। अँगरेज़ी भाषा हमें पैकेज दे सकती है, लेकिन संस्कार मातृभाषा ही देती है। वहीं विशिष्ट अतिथि भाषाविद प्रो. चितरंजन कर, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला ने कहा कि मानव संज्ञात्मक ज्ञान, कल्पना, स्मृति, तर्क, तुलना और शिष्टाचार मातृभाषा से ही सीखते हैं। अपनी भाषा सबसे बेहतर है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सच्चिदानंद शुक्ल ने कहा कि हमें अपनी माटी, मातृभाषा और मातृभूमि की पवित्रता का सदैव सम्मान करना चाहिए। हमें सदैव अपनी क्षमता और अपनी भाषा पर गर्व होना चाहिए। देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता एवं विशिष्टता भारतीय भाषाओं को भावनात्मक रूप से जोड़कर सशक्त बनाती है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. स्मिता शर्मा ने किया।

उक्त कार्यक्रम के समन्वय प्रो. शैल शर्मा, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय के प्राध्यापकगण, कर्मचारीगण, समस्त शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएँ बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि पद्मश्री श्री अनुज शर्मा, विधायक, धरसींवा विधानसभा

समाज इवेंट

अंग्रेजी हमें पैकेज दे सकती है लेकिन संस्कार मातृभाषा

रायपुर। हम अपनी माटी, मातृ भाषा और मातृभूमि की पवित्रता का सदैव सम्मान करें। हमें सदैव अपनी क्षमता और अपनी भाषा पर गर्व करना चाहिए। छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस के अवसर पर रविवि के कुलपति प्रो. सच्चिदानंद शुक्ला द्वारा विद्यार्थियों को संबोधित किया गया। कहा देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता एवं विशिष्टता भारतीय भाषाओं को भावात्मक रूप से जोड़कर सशक्त बनाती है। कार्यक्रम के माई पहुना जनप्रिय विधायक पद्मश्री अनुज शर्मा शामिल हुई, जिन्होंने कहा भाषा में निरंतर प्रवाह रहना चाहिए। सहज सरल छत्तीसगढ़ी हमें आगे बढ़ाती है। छत्तीसगढ़ी के सिनेमा में प्रयोग और परिवेश के अनेक अनुभव साझा करते हुए विद्यार्थियों को जानकारी दी।

छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस पर आयोजन

रविवि के साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला द्वारा 'छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस' का आयोजन किया गया। एक दिवसीय कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में राजभाषा आयोग के पूर्व सचिव पद्मश्री सुरेंद्र दुबे उपस्थित रहे। जिन्होंने कहा छत्तीसगढ़ी सशक्त भाषा है,इसे आठवीं अनुसूची में स्थान मिलना चाहिए। छत्तीसगढ़ी हमारी मां स्वरूप है, अंग्रेजी हमें पैकेज दे सकती है लेकिन संस्कार मातृ भाषा ही देती है। व्यक्ति को संज्ञानात्मक ज्ञान,कल्पना, स्मृति,तर्क,तुलना, शिष्टाचार मातृ भाषा से ही सीखने को मिलता है। कार्यक्रम में साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला की अध्यक्ष प्रो. शैल शर्मा,डॉ. स्मिता शर्मा, प्रो. कल्लोल के घोष, प्रो. रोहिणी प्रसाद, प्रो. बी एल सोनकर, डॉ. डी एन खूंटे, डॉ.नीलाभ कुमार, डॉ. गिरजा शंकर गौतम उपस्थित रहे।

नेवता पाती

छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस

साहित्य एवं भाषा – अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, म छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस 2024 के आयोजन होवत हे। कार्यक्रम म आप मन के गरिमामय उपस्थिति बर सादर बिनती हे।

माई पहुना

पद्मश्री अनुज शर्मा

विधायक, धरसींवा विधानसभा

पगरइत

प्रो. सच्चिदानंद शुक्ल, कुलपति

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर

खास पहुना

पद्मश्री सुरेन्द्र दुबे

प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय हास्य कवि

पूर्व सचिव, छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग

खास पहुना

प्रो. चित्तरंजन कर

भाषाविद्

पूर्व अध्यक्ष, साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला

बुधवार, 04 दिसबंर 2024

बेरा : मझनिहा 03:00 बजे

जगा – पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, प्रेक्षागृह

प्रो. शैल शर्मा	प्रो. मधुलता बारा	डॉ. गिरजा शंकर गौतम	डॉ. स्मिता शर्मा	डॉ. शैलेन्द्र कुमार पटेल
समन्वयक	सहसमन्वयक	सहसमन्वयक	सहसमन्वयक	कुलसचिव,

7. एक दिवसीय कार्यक्रम हरिवंश राय बच्चन जयंती
दिनांक– 27.11.2024

आज दिनांक 27.11.2024 को साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला के पाणिनि सभाकक्ष में हरिवंश राय 'बच्चन' की जयंती समारोह के उपलक्ष्य में छात्र-परिषद् (हिंदी) के द्वारा एक दिवसीय व्याख्यान आयोजित किया गया। 'बच्चन' के समग्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने प्रकाश डाला। छायावादोत्तर युग के प्रसिद्ध कवि एवं हालावाद के प्रवर्तक के रूप में बच्चन हिंदी साहित्य जगत में जाने जाते हैं। इन्होंने अनेक कविताओं का लेखन किया, परंतु इनकी सर्वप्रसिद्ध कविता 'मधुशाला' रही, जिसे इन्होंने 1935 में पहली बार मंच पर प्रस्तुत किया। प्रो. शैल शर्मा अध्यक्ष साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला, ने बच्चन के परिवारिक रिश्तों के विषय पर प्रकाश डाला। डॉ.गिरजाशंकर गौतम ने मधुशाला कविता एवं हालावाद के विषय पर प्रकाश डाला। डॉ. कौस्तुभमणि द्विवेदी ने बच्चन के विषय में विस्तृत रूप से चर्चा की डॉ. विभाषा मिश्र ने बच्चन की कविता मधुशाला को गाकर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित किया। शोधकर्ता ओंकार साहू ने बच्चन के व्यक्तित्व का परिचय दिया। एम.ए. हिंदी के विद्यार्थी हेमकिरण निषाद ने 'आत्मपरिचय', योगेश्वरी साहू ने 'प्यास लगी थी गजब की', सस्मिता ने 'तुम मुझको कब तक रोकोगे', शांता ने आज मुझसे दूर दुनिया', रितेश ने 'मधुशाला', रोशनी ने 'मैं जीवन में कुछ न कर सका', जी. सुरेश ने 'मधुशाला' का अंग्रेजी अनुवाद कर सुनाया, संस्कृति परगनिहा, ने 'जो बीत गई सो बात गई', गौरव राजपूत ने 'बच्चन' की काव्यगत विशेषताओं की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन संस्कृति परगनिहा एम.ए. हिंदी तृतीय सेमेस्टर और आभार प्रदर्शन वंदना शर्मा एम.ए. हिंदी तृतीय सेमेस्टर हिंदी छात्र संघ अध्यक्ष ने किया।

कार्यक्रम में प्रो. शैल शर्मा, डॉ. गिरजाशंकर गौतम, विभाग के समस्त अतिथि प्राध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. विभाषा मिश्र, सह समन्वयक वंदना शर्मा एम.ए. हिंदी तृतीय सेमेस्टर, सह समन्वयक रितिका खत्री एम.ए. हिंदी प्रथम सेमेस्टर रहे।

GPS Map Camera
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
6hww+697, आमानाका, रायपुर, छत्तीसगढ़ 492010, भारत
Lat 21.245604° Long 81.596047°
27/11/24 09:55 AM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
6hww+697, आमानाका, रायपुर, छत्तीसगढ़ 492010, भारत
Lat 21.245616° Long 81.596066°
27/11/24 09:55 AM GMT +05:30
Google

साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
छात्र-परिषद् हिंदी
हरिवंश राय बच्चन जयंती-समारोह
27/11/1907
18/01/2003
प्रेरणास्रोत एवं मार्गदर्शक
प्रो. सच्चिदानंद शुक्ल
कुलपति
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ. ग.)
हरिवंश राय बच्चन
कवि, आलोचक
हालावाद के प्रवर्तक
अध्यक्ष
प्रो. शैल शर्मा
साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर
स्थान : पाणिनि सभाकक्ष, दिनांक : 27 नवंबर 2024, बुधवार समय : 09 : 30 बजे
सह समन्वयक
छात्र परिषद् अध्यक्ष
वंदना शर्मा
समन्वयक
डॉ. विभाषा मिश्र
सह समन्वयक
छात्र परिषद् सचिव
रीतिका खत्री

8. एक दिवसीय व्याख्यान– भारतीय काव्य शास्त्र और रस संप्रदाय
दिनांक– 18.11.2024

साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला के पाणिनि सभागार मे दिनांक 18.11.2024 को एक दिवसीय व्याख्यान का आयोजित किया गया। विषय विशेषज्ञ प्रो. मुन्ना तिवारी, हिंदी विभागए बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ.प्र.) ने 'भारतीय काव्यशास्त्र और रस संप्रदाय' विषय पर व्याख्यान दिया। प्रो. मुन्ना तिवार ने काव्यशास्त्र के विविध पक्षों पर अपने विचार रखें। उन्होंने कहा कि भरतमुनी के सूत्र पर ही पूरा काव्यशास्त्र खड़ा हुआ है। खुले मंच पर खेला गया प्रथम नाटक 'असुर पराजय' है। रंगमंच की शुरूवात भरतमुनी के समय में हुई। रस संप्रदाय का परिचय देते हुए उन्होंने बताया कि रस मानव के भीतर है जो परिस्थितियों के अनुसार भीतर से फूट पड़ता है, बाहर आ जाता है। काव्यशास्त्र में रस काव्यानन्द के अर्थ में समझा जाता है अर्थात काव्य को पढ़ने, सुनने और देखने से प्राप्त होने वाला आनंद ही रस है। विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से वक्ता ने विषय को विद्यार्थियों हेतु सरल सहज बनाया।

कार्यक्रम में विभाग की अध्यक्ष प्रो. शैल शर्मा, डॉ. गिरजा शंकर गौतम, विभाग के समस्त अतिथि प्राध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन गौरव सिंह राजपूत, एम.ए. हिंदी तृतीय सेमे. एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. गिरजा शंकर गौतम ने किया।

प्रो. मुन्ना तिवारी, झांसी **2024-25**

GPS Map Camera
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
6hww+697, आमानाका, रायपुर, छत्तीसगढ़ 492010, भारत
Lat 21.245634° Long 81.59602°
18/11/24 11:49 AM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
Raipur, Chhattisgarh, India
6hww+697, Amanaka, Raipur, Chhattisgarh
492010, India
Lat 21.245605° Long 81.596006°
18/11/24 12:05 PM GMT +05:30
Google

9. गजानन माधव मुक्तिबोध जयंती
दिनांक– 13.11.2024

आज दिनांक 13.11.2024 को साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला के पाणिनि सभाकक्ष में गजानन माधव मुक्तिबोध के जयंती के उपलक्ष्य में छात्र–परिषद् (हिंदी) के द्वारा एक दिवसीय व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुक्तिबोध के समग्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने प्रकाश डाला। प्रगतिशील चेतना एवं नई कविता के बीच की कड़ी मुक्तिबोध हिंदी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। साहित्यकार स्वयं भाषा का निर्माण करता है। छोटी कविता में विषय का न्याय नहीं होता ऐसा मानने वाले मुक्तिबोध इसलिए लंबी कविताएँ लिखा करते थे। फैंटेसी, नए बिंब, उपमान इनके काव्य की विशेषाएँ हैं। प्रो.शैल शर्मा, अध्यक्ष साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला, ने मुक्तिबोध के ग्लोबलाइजेशन पर प्रकाश डाला, उन्होंने बताया कि मुक्तिबोध विदेशों में भी पढ़े जाते हैं अपनी अनुदित रचनाओं के माध्यम से। इनकी काव्यमय क्लिष्टता को सहजता की ओर ले जाने की प्रक्रिया पर डॉ.कौस्तुभमणि द्विवेदी ने प्रकाश डाला। डॉ. विभाषा मिश्र ने ब्रह्मराक्षस कविता की पृष्ठभूमि की ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकृष्ट किया। कविता की संरचना विशेष पर श्री नत्थानी जी ने अपने विचार व्यक्त किए। अतिथि शिक्षक डॉ.शारदा सिंह ने भूल गलती, डॉ.अभीप्सा पटेल, मुझे कदम कदम में चौराहे मिलते हैं कविता पाठ कर उसकी पृष्ठभूमि पर चर्चा की। विद्यार्थी वंदना शर्मा ने मुक्तिबोध के व्यक्तित्व का परिचय दिया, संस्कृति परगनिहा ने घोर धर्नुधर बाण तुम्हारा, रितिका खत्री ने मैं तुम लोगों से दूर हूँ, नागेंद्र ने मैं उनका ही होता, रौशनी ठाकुर ने बह्म राक्षस, अमित लहरे ने अंधेरे में, का काव्य पाठ किया। गौरव राजपूत ने मुक्तिबोध की काव्यगत विशेषताओं, रितेश गुप्ता ने काव्यगत बिंब व फैंटेसी को रेखांकित किया। कार्यक्रम का संचालन रितेश गुप्ता एम.ए.हिंदी तृतीय सेमेस्टर ने और आभार प्रदर्शन डॉ.बरातु राम ध्रुव ने किया।

कार्यक्रम में प्रो.शैल शर्मा, डॉ.स्मिता शर्मा, विभाग के समस्त अतिथि शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम समन्वयक डॉ.कुमुदिनी घृतलहरे, सह समन्वयक वंदना शर्मा, एम.ए.तृतीय सेमेस्टर, सह समन्वयक रितिका खत्री एम.ए.प्रथम सेमेस्टर रहे।

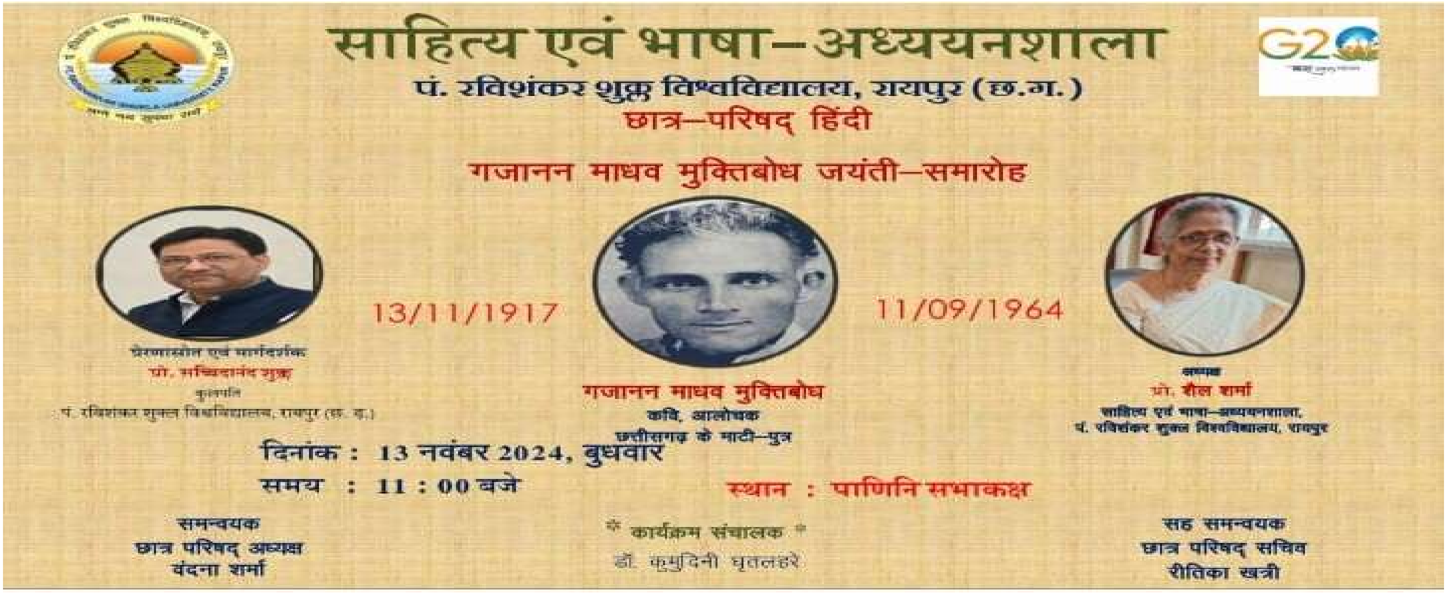

साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
छात्र–परिषद् हिंदी
गजानन माधव मुक्तिबोध जयंती–समारोह
13/11/1917
11/09/1964
गजानन माधव मुक्तिबोध
कवि, आलोचक
छत्तीसगढ़ के माटी–पुत्र
प्रो. शैल शर्मा
दिनांक : 13 नवंबर 2024, बुधवार
समय : 11 : 00 बजे
स्थान : पाणिनि सभाकक्ष
समन्वयक
छात्र परिषद् अध्यक्ष
वंदना शर्मा
कार्यक्रम संचालक
डॉ. कुमुदिनी घृतलहरे
सह समन्वयक
छात्र परिषद् सचिव
रीतिका खत्री

GPS Map Camera
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
6hww+697, आमानाका, रायपुर, छत्तीसगढ़ 492010, भारत
Lat 21.245659° Long 81.596033°
13/11/24 11:03 AM GMT +05:30
Google

G20
साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़
छात्र-परिषद (हिन्दी)
GPS Map Camera
रायपुर,छत्तीसगढ़,भारत
Aamnaka, रायपुर, 492010, छत्तीसगढ़, भारत
Lat 21.245674, Long 81.596034
11/13/2024 12:38 PM GMT+05:30
Note : Captured by GPS Map Camera

10. आचार्य नरेंद्र देव वर्मा जयंती–समारोह
दिनांक– 04.11.2024

हमारे राजगीत के रचयिता आचार्य नरेंद्र देव वर्मा, कवि, नाटककार, उपन्यासकार, समीक्षक, भाषाविद् एवं साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के एलुमनी की आज दिनांक 04.11.2024 को जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम छत्तीसगढ़ी छात्र परिषद् के द्वारा किया गया। जिसमें कार्यक्रम संचालक डॉ. कौस्तुभमणि द्विवेदी ने मंच संचालन किया। कार्यक्रम की शुरूवात राजगीत 'अरपा पैरी के धार' से किया गया। जिसके लेखक आचार्य नरेंद्र देव वर्मा जी हैं। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. विभाषा मिश्र ने आचार्य नरेंद्र देव वर्मा जी के साहित्यिक यात्रा का विस्तृत उल्लेख करते हुए छत्तीसगढ़ भाषा के उद्विकास पुस्तक के लेखन एवं साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला में की गई छत्तीसगढ़ी भाषा में पी-एच. डी. का उल्लेख किया। दूसरे वक्ता के रूप में डॉ. कुमुदिनी घृतलहरे ने आचार्य नरेंद्र देव वर्मा जी के कविता का पाठ किया एवं उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख करते हुए आज के संदर्भ में आचार्य नरेंद्र देव वर्मा जी के साहित्य के महत्व को बताया। इस अवसर पर अनेक छात्र-छात्राओं ने आचार्य नरेंद्र देव वर्मा जी के जीवन एवं साहित्य के विभिन्न पहलु पर विचार व्यक्त किया जिसमें श्री आदित्य साहूए एम. ए. प्रथम सेमेस्टर विषय-हिंदी, प्रकाश वर्मा, एम. ए. तृतीय सेमेस्टर, विषय-छत्तीसगढ़ी, निखिल तिवारी, एम. ए. प्रथम सेमेस्टर विषय-हिंदी, सौम्य सेन एम. ए. प्रथम सेमेस्टर, विषय अंग्रेजी आदि हैं। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. शैल शर्मा, अध्यक्ष, साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला, ने आचार्य नरेंद्र देव वर्मा, जी के विभाग में सक्रिय योगदान का संस्मरण करते हुए उनके शोध को अमूल्य निधि बताया। आचार्य नरेंद्र देव वर्मा बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उनके साहित्यिक योगदान अविस्मरणीय है। कार्यक्रम में श्री मोहन लाल बत्ता ने भी अपने विचार रखे। अंत में डॉ. शारदा सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। आचार्य नरेंद्र देव वर्मा का जीवन और साहित्य विभिन्न प्रतियोगी परीक्षा में शामिल है अतः विद्यार्थियों के लिए यह कार्यक्रम अत्यंत उपयोगी रहा।

आचार्य नरेंद्र देव वर्मा जयंती–समारोह

11. हिंदी साहित्य का नवजागरण काल (व्याख्यान)
दिनांक– 21.10.2024

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के कला भवन के सेमिनार हाल में साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला द्वारा दिनांक 21.10.2024 को एक दिवसीय व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के सारस्वत वक्ता प्रो. वीरेन मोहन शुक्ल, पूर्व प्रो. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, म.प्र.) ने 'हिंदी साहित्य का नवजागरण काल' विषय पर अपना विचार रखा। अपनी बात रखते हुए वे कहते हैं कि वर्तमान शताब्दी हमारे लिए जागरण की शताब्दी है। 19वीं शताब्दी में अनेक सामाजिक, राजनैतिक आंदोलन जन्म लेते हैं जिसे हम नवजागरण काल कहते हैं। केवल नवजागरण से ही अनेक आंदोलन इस देश में उपजे हैं और यही वह समय है जब आजादी को लेकर अनेक आंदोलन जन्म लेते हैं। इन सभी पृष्ठभूमि को समझे बिना हम आधुनिक साहित्य को नहीं समझ सकते। 19वीं शताब्दी में ही हिंदी और उर्दू पत्रकारिता का जन्म होता है। यह दो भाषाओं की संस्कृति के मिलन का समय है। केवल पत्रकारिता ही नहीं बल्कि विभिन्न साहित्यिक विधाओं विशेषकर गद्य विधाओं का जन्म भी इसी काल में हुआ। अर्थात 19वीं शताब्दी यदि जागरण की शताब्दी है तो 20वीं शताबदी उसके प्रतिफल की शताब्दी है।

प्रो. वीरेन मोहन शुक्ल, सागर

12. हिंदी दिवस पखवाड़ा समापन समारोह

दिनांक– 28.09.2024

साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला के पाणिनि सभागार में दिनांक 28.09.2024 को हिंदी दिवस पखवाड़ा कार्यक्रम का समापन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्रो. दिनेश कुशवाह, अध्यक्ष हिंदी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.) ने ‘साहित्य का मर्म और अध्यापन की परंपरा‘ विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि जिस ज्ञान को सम्प्रेषित न किया जा सके वह ज्ञान मरूभूमि के समान है। साहित्य संस्कृति का संवर्धन करता है, संवेदना का विस्तार करता है। उन्होंने कहा कि अध्यापक से प्रश्न पुछने हेतु विद्यार्थियों को सचेत रहना चाहिए, वे प्रतिपक्ष की भूमिका में रहें। साहित्य का मर्म समझकर ही साहित्य को समझा और समझाया जा सकता है। विविध उदाहरणों के माध्यम से वक्ता ने विद्यार्थियों को विषय वस्तु से रू-ब-रू करवाया। समापन दिवस में विद्यार्थियों हेतु हिंदी में हस्ताक्षर प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें विद्यार्थियों ने कलात्मक हस्ताक्षर किए।

इस कार्यक्रम में अध्यक्ष प्रो. शैल शर्मा, प्रो. ए.के. प्रसाद, अर्थशास्त्र विभाग, डॉ. गिरजाशंकर गौतम, डॉ. स्मिता शर्मा, समस्त शिक्षकगण, शोधार्थीगण एवं छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ. विभाषा मिश्र एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. गिरजाशंकर गौतम ने किया।

प्रो. दिनेश कुशवाह, रीवा **2024-25**

13. हिंदी दिवस पखवाड़ा शुभारंभ
दिनांक– 14.09.2024

साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला के पाणिनि सभागार में दिनांक 14.09.2024 को हिंदी दिवस पखवाड़ा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार हेतु विद्यार्थियों के लिए विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। भाषण प्रतियोगिता, कविता पाठ, स्लोगन लेखन, पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़ कर भागीदारी की। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. शैल शर्मा ने हिंदी को विश्वव्यापी भाषा बनाने हेतु प्रोत्साहित किया। हिंदी के वैश्विक परिदृश्य पर उन्होंने प्रकाश डाला। डॉ. स्मिता शर्मा ने हिंदी भाषा के प्रति आत्मीय भाव रखने की बात कही। कैरियर निर्माण हेतु अँगरेज़ी के महत्व को भी बताया। डॉ. कौस्तुभमणि द्विवेदी ने हिंदी परंपरा पर अपनी बात रखी।

इस कार्यक्रम में अध्यक्ष प्रो. शैल शर्मा, डॉ. स्मिता शर्मा, समस्त शिक्षकगण, शोधार्थीगण एवं छात्र–छात्राएँ उपस्थित रहे। मंच संचालन छात्र रवि कुमार देवांगन ने किया।

हिंदी दिवस पखवाड़ा शुभारंभ

14. शिक्षक दिवस का आयोजन

दिनांक– 05.09.2024

साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला के विद्यार्थियों द्वारा सेमिनार सभागाार, कला भवन में दिनांक 05.09.2024 को शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम शिक्षकों का आत्मीय स्वागत एवं दीप प्रज्वलन के पश्चात् विद्यार्थियों द्वारा गीत संगीत का कार्यक्रम किया गया। शिक्षकों से भी रोचक गतिविधियाँ करवाई गई। विभागाध्यक्ष प्रो. शैल शर्मा ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों को शिक्षा एवं समय के महत्व को बताया। अनुशासन की महत्ता बताते हुए उन्होंने कहा कि यह सफलता की कुंजी है।

इस कार्यक्रम में अध्यक्ष प्रो. शैल शर्मा, डॉ. गिरजा शंकर गौतम, डॉ. स्मिता शर्मा, समस्त शिक्षकगण, शोधार्थीगण एवं छात्र–छात्राएँ उपस्थित रहें। मंच संचालन विद्यार्थियों के द्वारा किया गया।

शिक्षक दिवस का आयोजन

15. **One Day Lecture**

दिनांक– 03.09.2024

The School of Studies in Literature and Languages at Pandit Ravishankar Shukla University hosted a lecture on "PG and Research in English: NEP 2020" on September 3, 2024. Renowned academician and expert in English Literature, Prof. Anil Paliwal, delivered the lecture.

In his lecture, Professor Paliwal provided an in-depth examination of the National Education Policy 2020 (NEP 2020), elucidating its key characteristics and underscoring the imperative of translating theoretical knowledge into practical application. He emphasized the crucial role of implementation in the learning process, asserting that true wisdom is attained when individuals actively apply their knowledge to develop their skills and competencies.

Professor Paliwal's lecture transcended the realm of academic discourse, as he delved into the existential dimensions of human experience, exploring the meaning and purpose of life. He underscored the importance of having a singular, overarching goal that guides one's actions and decisions, while simultaneously drawing upon the wisdom and insights gleaned from literary studies. He posited that a profound understanding of literature can empower individuals to navigate life's most formidable challenges with optimism and resilience, fostering the ability to confront and transform adversity into opportunity.

Professor Paliwal concluded by distinguishing between "man" (a biological entity) and "human" (a being transcending existence through knowledge, values, and morals). He emphasized that becoming "human" requires intentionally applying acquired wisdom, principles, and ethics, elevating oneself beyond biology. This distinction is fundamental to understanding what it means to be truly human.

The event reached its formal conclusion with a vote of thanks delivered by Dr Giraja Shankar Gautam, who expressed gratitude to Professor Paliwal for his enlightening lecture, as well as to the organizers and attendees for their participation and engagement. The

ceremony thus drew to a close, leaving a lasting impression on all who were present.

प्रो. अनिल पालीवाल, भोपाल **2024-25**

16. राष्ट्रीय संगोष्ठी (विषय– छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं लोकभाषाएँ)
दिनांक– 24.08.2024

3x6 2pc

साहित्य अकादेमी नई दिल्ली एवं साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) के संयुक्त तत्वावधान में **'छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं लोकभाषाएँ' विषय** पर द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला के पाणिनि सभागार में दिनांक 23–24 अगस्त 2024 को किया गया। प्रथम दिवस उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता डॉ. गिरधारी लाल लोधी, सहायक प्रध्यापक देव सुन्दरी मेमोरियल कॉलेज, झाझा (बिहार) एवं श्रीमति मीनल मिश्रा, एग्जीक्यूटिव वाईस प्रेसिडेंट, नाचा, चेयर पर्सन छत्तीसकोश नॉर्थ अमेरिका से हायब्रिड मोड पर शामिल हुए। प्रथम वक्ता डॉ. गिरधारी लाल लोधी ने **'छत्तीसगढ़ी संस्कृति के समक्ष चुनौतियाँ'** विषय पर अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने छत्तीसगढ़ी संस्कृति के बदलते स्वरूप पर अपने विचार रखे। उन्होंने चिंता व्यक्त किया कि छत्तीसगढ़ी प्राचीन संस्कृति है। आधुनिकता उसके अस्तित्व पर प्रभाव डाल रही है। नॉर्थ अमेरिका से जुड़ी दूसरी वक्ता श्रीमती मीनल मिश्रा ने **'यू.एस.ए. में छत्तीसगढ़ी प्रचार का स्वरूप'** विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि वहाँ रह कर प्रवासी छत्तीसगढ़िया लोग अपनी छत्तीसगढ़ी संस्कृति के प्रचार प्रसार हेतु प्रतिबद्ध हैं। वे सभी यहाँ के रीति–रिवाज एवं परंपराओं का अनुसरण करते हुए नई पीढ़ी को इसे हस्तांतरित कर रहे हैं एवं विविध पारंपरिक आयोजन पर रैली के माध्यम से अमेरिका वासियों को भी इनसे रू–ब–रू करवाते हैं।

इस सत्र में श्री रामकुमार वर्मा, डॉ. राम नारायण टण्डन, डॉ. विकास राजपोपट, प्राध्यापक गुरू घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, शोधार्थी दीपक तिवारी, निशांत तिवारी, लीनिमा साहू, रतिराम गढ़ेवाल, बस्त्रानी, कृपा, ईश्वर निषाद, जागृति, डॉ. रोसमीना कुजूर, डॉ. डेजी कुजूर, डॉ. रीता यादव, डॉ. सीमारानी प्रधान ने शोध–पत्र का वाचन किया।

प्रथम दिवस
उदघाटन सत्र

साहित्य अकादेमी नई दिल्ली एवं साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) के संयुक्त तत्त्वाधान में **'छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं लोकभाषाएँ' विषय** पर द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला के पाणिनि सभागार में हुआ। कार्यक्रम के दुसरे व अंतिम दिन के प्रथम सत्र में प्रो. शैल शर्मा, आदरणीय डॉ.गिरजाशंकर गौतम एवं स्मिता शर्मा की उपस्थिति में अनेक विद्यार्थियों के द्वारा शोध–पत्र का वाचन किया गया जिसमें एम.ए. हिंदी तृतीय सेमेस्टर के छात्र गौरव राजपूत, एम.ए. अंग्रेजी प्रथम सेमेस्टर की छात्रा इश्रिया मिश्रा, एवं अंग्रेजी तृतीय सेमेस्टर की छात्रा अंजोरी खमकरयाल का शोध–पत्र सराहनीय रहा। कार्यक्रम के दूसरे सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. रामनारायण पटेल (दिल्ली विश्वविद्यालय) एवं डॉ. आरती पाठक (दिल्ली) हायब्रीड मोड पर शामिल हुए। कार्यक्रम के प्रथम वक्ता डॉ. पटेल ने अपनी बात रखते हुए लोकभाषा की विशेषता को बतलाया और कहा कि छत्तीसगढ़ी हो या भोजपुरी या फिर कोई अन्य बोली, ये सभी बोलियाँ हिंदी से भिन्न नहीं हैं। कार्यक्रम के दूसरे वक्ता डॉ. आरती पाठक ने भी लोकभाषा पर प्रकाश डालते हुए छत्तीसगढ़ की संस्कृति को सभी दृष्टियों से समृद्ध बताया। यहाँ के खान–पान, तीज–त्यौहार में जितनी विविधता है वह अन्य किसी राज्य में देखने को नहीं मिलता। कार्यक्रम के अंत में डॉ.गिरजाशंकर गौतम के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

द्वितीय दिवस

प्रथम वक्ता- डॉ. रामनारायण पटेल

द्वितीय वक्ता- डॉ. आरती पाठक

17. बैगानी भाषा सम्मेलन (दो दिवसीय)

दिनांक– 23–24 अगस्त 2024

Third Session: 4.00 p.m. to 5.30 p.m.

Baiga Tribe and Life style

Chair : **Vijay Chourasiya**

Papers : **Manti Dhurwey** *(Baiga Domestic Songs)*
Lehari Bai *(Baiga Tribe Food habits)*
Jahar Singh Odariya *(Baiga rites)*

Saturday, 24 August 2024

Fourth Session: 10.00 a.m. to 11.30 a.m.

Baigani Culture

Chair : **Shikha Patidar**

Papers : **Rakesh Chandel** *(History of Baiga culture)*
Sadhuram Jamoriya *(Baiga believes and costumes)*
Gopikrishna Soni *(Baiga Feasts and Festivals)*

Tea

Fifth Session: 11.30 a.m. to 1.00 p.m.

Baigani Folklore

Chair : **Dharmendra Pare**

Papers : **Vijay Chourasiya** *(Oral Epics in Baigani)*
Dayaram Rathudia *(Baiga Folk songs)*
Swati Anand *(Baiga Folklore)*

Lunch

Sixth Session: 2.00 p.m. to 3.30 p.m.

Baigani Art

Chair : **Rakesh Chandel**

Papers : **Shikha Patidar** *(Baiga Architecture)*
Jhamlal Rasiya *(Baiga Tattooing)*
Lakhan Lal Odariya *(Baiga Folk Art)*

Tea

Seventh Session: 3.30 p.m. to 4.30 p.m.

Baigani Poets' Meet

Chair : **Motiram Kachanariya**

Readings : **Chain Singh Sukhiya**
Lehari Bai
Manti Dhurwey
Sadhuram Jamoriya
Dhaniram Kadamiya

Vote of thanks : **N. Suresh Babu,** *Deputy Secretary, Sahitya Akademi*

RSVP: 011-23386626 / 27 / 28
E-mail: secretary@sahitya-akademi.gov.in
Website: http://sahitya-akademi.gov.in

साहित्य अकादेमी

संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
एवं
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर
के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

बैगानी भाषा सम्मेलन

में आपको सादर आमंत्रित करते हैं

23-24 अगस्त 2024

सभागार, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

कार्यक्रम

शुक्रवार, 23 अगस्त 2024

उद्घाटन सत्र : पूर्वाह्न 10.00 बजे - 11.30 बजे

स्वागत वक्तव्य : **के. श्रीनिवासराव,** सचिव, साहित्य अकादेमी
उद्घाटन वक्तव्य : **अर्जुन सिंह धुर्वे,** प्रख्यात बैगानी लेखक
बीज वक्तव्य : **महेन्द्र कुमार मिश्र,** प्रख्यात लोकसाहित्यविद्
विशिष्ट अतिथि वक्तव्य : **सच्चिदानन्द शुक्ल,** कुलपति, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
अध्यक्षीय वक्तव्य : **माधव कौशिक,** अध्यक्ष, साहित्य अकादेमी
धन्यवाद ज्ञापन : **शैलेन्द्र कुमार पटेल,** कुलसचिव, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय

चाय

पहला सत्र : मध्याह्न 12.00 बजे - अपराह्न 1.30 बजे

बैगानी भाषा

अध्यक्षता : **अर्जुन सिंह धुर्वे**

आलेख-पाठ : **धनीराम कडमिया** (बैगानी भाषा का इतिहास)
चैन सिंह सुरखिया (बैगानी लिपि और व्याकरण)
अमर लाल बरिया (बैगानी भाषा और उसकी बोलियाँ)

भोजन

दूसरा सत्र : अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे

बैगानी साहित्य

अध्यक्षता : **महेन्द्र कुमार मिश्र**

आलेख-पाठ : **धर्मेन्द्र पारे** (बैगानी साहित्य का इतिहास)
बजरू राम सरडिया (बैगानी साहित्य विधा)
जुगलाल निगुनिया (बैगानी कथा परम्परा)

चाय

तीसरा सत्र : सायं 4.00 बजे - 5.30 बजे

बैगा जनजाति और जीवन शैली

अध्यक्षता : **विजय चौरसिया**

आलेख-पाठ : **दुलार योताम कुल्लू** (बैगा पारिवारिक गीत)
लहरी बाई (बैगा जनजाति के खानपान की आदतें)
जेहर सिंह ओदरिया (बैगा संस्कार)

शनिवार, 24 अगस्त 2024

चौथा सत्र : पूर्वाह्न 10.00 बजे - पूर्वाह्न 11.30 बजे

बैगा संस्कृति

अध्यक्षता : **शिखा पतिदार**

आलेख-पाठ : **राकेश चंदेल** (बैगा संस्कृति का इतिहास)
साधुराम जमोरिया (बैगा मान्यताएँ और वेशभूषा)
गोपीकृष्ण सोनी (बैगा पर्व और त्योहार)

चाय

पाँचवाँ सत्र : पूर्वाह्न 11.30 बजे - अपराह्न 1.00 बजे

बैगानी लोक साहित्य

अध्यक्षता : **धमेन्द्र पारे**

आलेख-पाठ : **विजय चौरसिया** (बैगानी के वाचिक महाकाव्य)
दयाराम राठूडिया (बैगा लोकगीत)
स्वाति आनंद (बैगा लोक साहित्य)

भोजन

छठवाँ सत्र : अपराह्न 2.00 बजे - अपराह्न 3.30 बजे

बैगानी कला

अध्यक्षता : **राकेश चंदेल**

आलेख-पाठ : **शिखा पतिदार** (बैगा वास्तुकला)
झामलाल रशिया (बैगा गोदना)
लाखनलाल ओदारिया (बैगा लोक कला)

चाय

सातवाँ सत्र : अपराह्न 3.30 बजे - सायं 4.30 बजे

बैगानी कवि सम्मिलन

अध्यक्षता : **मोतीराम कचनरिया**

कविता-पाठ : **चैन सिंह सुरखिया**
लहरी बाई
मंती धुर्वे
साधुराम जमोरिया
धनीराम कडमिया

धन्यवाद ज्ञापन : **एन. सुरेश बाबु,** उपसचिव, साहित्य अकादेमी

उत्तरापेक्षी : 011-23386626 / 27 / 28
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
वेबसाइट : http://sahitya-akademi.gov.in

Sahitya Akademi

Ministry of Culture
Government of India

Sahitya Akademi, New Delhi
and
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur
cordially invites you to the

Baigani Language Convention

23-24 August 2024

Auditorium, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, Chhattisgarh

Programme

Friday, 23 August 2024

Inaugural Session: 10.00 a.m. to 11.30 a.m.

Welcome Address : **K. Sreenivasarao**, *Secretary, Sahitya Akademi*
Inaugural Address : **Arjun Singh Dhurwey**, *Eminent Baigani writer*
Keynote Address : **Mahendra Kumar Mishra**, *Eminent Folklorist*
Guest of Honour : **Sachchidanand Shukla**, *Vice Chancellor, Pt. Ravishankar Shukla University*
Presidential Address : **Madhav Kaushik**, *President, Sahitya Akademi*
Vote of Thanks : **Shailendra Kumar Patel**, *Registrar, Pt. Ravishankar Shukla University*

Tea

First Session: 12.00 noon to 1.30 p.m.

Baigani Language

Chair : **Arjun Singh Dhurwey**

Papers : **Dhaniram Kadamiya** *(History of Baigani Language)*
Chain Singh Sukhiya *(Baigani Script and Grammar)*
Amar Lal Bariya *(Baigani language and its dialects)*

Lunch

Second Session: 2.30 p.m. to 4.00 p.m.

Baigani Literature

Chair : **Mahendra Kumar Mishra**

Papers : **Dharmendra Pare** *(History of Baigani Literature)*
Bajru Ram Sardiya *(Genre in Baigani Literature)*
Juglal Niguniya *(Baigani Story Tradition)*

Tea

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के संयुक्त तत्त्वाधान में दो दिवसीय बैगानी भाषा सम्मेलन का आयोजन दिनांक 23.08.2024 एवं 24.08.2024 को अर्थशास्त्र अध्ययनशाला और साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर में संपन्न हुआ। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो.आलोक चक्रवाल, कुलपति गुरूघासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय,बिलासपुर, विशिष्ट अतिथि प्रो.सच्चिदानंद शुक्ल, कुलपति पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, अध्यक्षता प्रो.माधव कौशिक, अध्यक्ष, साहित्य अकादेमी , नई दिल्ली, उद्घाटन वक्तव्य पद्मश्री अर्जुन सिंह धुर्वे, प्रख्यात बैगानी लेखक, एवं डॉ.महेन्द्र कुमार मिश्र, प्रख्यात लोकसाहित्यकार बीज वक्तव्य दिया। डॉ. के.श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं डॉ. शैलेन्द्र कुमार पटेल, कुलसचिव, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय तथा कार्यक्रम समन्वयक प्रो. रविन्द्र ब्रम्हे, प्रो. शैल शर्मा , विश्वविद्लाय के सम्मनित प्राध्यापकगण, छात्र–छात्राएँ नगर के गणमान्य नागरिक एवं साहित्यकार मीडिया के सदस्य उपस्थित रहें।

डॉ. के श्रीनिवासराव ने अतिथियों का शॉल से स्वागत किया तत्पश्चात् प्रो. सच्चिदानंद शुक्ल कुलपति पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय ने सभी अतिथियों का शॉल एवं प्रतीक चिह्न देकर सम्मनित किया। पद्मश्री अर्जुन सिंह धुर्वे एवं उनके साथियों द्वारा अतिथियों का बैगानी संस्कृति चिन्ह बीरनमाला से सम्मान किया । डॉ. के श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि बैगानी वाचिक परंपरा लुप्त हो रही है, इसके संरक्षण के लिए बैगानी साहित्य एवं भाषा की ओर शोधार्थी एवं साहित्यकारों को ध्यान देने की आवश्यकता है। बैगानी भाषा सम्मेलन का यह प्रथम आयोजन पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में होने जा रहा है। डॉ. महेंद्र कुमार मिश्र प्रख्यात लोक साहित्यविद् के द्वारा अपने बीज वक्तव्य में बैगानी भाषा को विज्ञान से जोड़ते हुए चिकित्सा के क्षेत्र में बैगा जनजाति के अमूल्य योगदान की प्रशंसा की। प्रोफेसर सच्चिदानंद शुक्ल ने अपने वक्तव्य में कहा कि भाषा तथा संस्कृति के बीच गहरा संबंध है। भारतीय ज्ञान परंपरा के अंर्तगत संस्कृति के तत्वों को वैज्ञानिक पद्धति के साथ जोड़कर देखना चाहिए। प्रोफेसर आलोक चक्रवाल ने अपने वक्तव्य में जीवन से जुड़ी घटनाओं को साझा किया, उन्होंने कहा

कि माँ, भाषा, और मातृभूमि का कोई विकल्प नहीं है। प्रो. माधव कौशिक ने अध्यक्षता करते हुए कहा की मुझे प्रसन्नता हो रही है कि यह बैगानी भाषा सम्मेलन का प्रथम अवसर है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विशेष तौर पर छात्रों को स्थानीय भाषा से जोड़ने की आवश्यकता है, इसे जानने का यह सम्मेलन एक अवसर है। डॉ. शैलेंद्र कुमार पटेल के द्वारा मंचस्थ अतिथियों तथा कलाकारों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम में मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के बैगानी भाषा के कुल 23 साहित्यकार, 15 शोधार्थी एवं 281 छात्र तथा रायपुर नगर के गणमान्य नागरिक एवं साहित्यकार उपस्थित रहें।

प्रथम तकनीकी सत्र में श्री धनीराम कडमिया ने बैगानी भाषा के इतिहास को प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि बैगानी भाषा की सरलता उन के जीवन शैली को दर्शाती है। तत्पश्चात बैगानी भाषा और उसकी बोलियों के संबंध में विस्तृत चर्चा करते हुए श्री अमरलाल बरिया ने बैगानी जनजाति द्वारा प्रयुक्त कई सांस्कृतिक शब्दों के संदर्भित अर्थ बताए। तीसरे वक्ता के रूप में श्री चैन सिंह सुरखिया ने बैगानी लिपि और व्याकरण के संबंध में जानकारी दी। सत्र की अध्यक्षता कर रहे पद्मश्री अर्जुन सिंह धुर्वे ने बैगानी गीतों के संकलन तथा शब्दकोश के संकलन की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अर्जुन सिंह धुर्वे ने किया।

प्रथम तकनीकी सत्र
अध्यक्षता - पद्मश्री अर्जुन सिंह धुर्वे

दूसरे तकनीकी सत्र में प्रो. धर्मेंद्र पारे ने बैगानी साहित्य के इतिहास की सिलसिलेवार जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि अंग्रेज अधिकारी व मिशनरी द्वारा इतिहास पर सर्वप्रथम प्रकाश डाला गया। उन्होंने अन्य ऐतिहासिक साक्ष्यों पर चर्चा की। दूसरे वक्ता श्री बजरू राम सरडिया ने बैगानी लोकसाहित्य विधा के अंतर्गत बैगानी बैगानी कहानी सुनाई। श्री जुगलाल निगुनिया ने बैगानी कथा परंपरा के संबंध में कहा कि बैगा जनजाति में संयुक्त परिवार व्यवस्था है। वे प्रकृति से जुड़े हुए है। अतः प्रकृति के उपादानों से ही कहानी के पात्रों की कल्पना करते हैं। अध्यक्षता कर रहे श्री महेंद्र कुमार मिश्र ने कहा कि भारतीय ज्ञान व्यवस्था अलग-अलग लोक साहित्य की विलक्षणता को प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने बैगा शब्द के अर्थ को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया।

द्वितीय तकनीकी सत्र
अध्यक्षता महेंद्र कुमार मिश्र

तृतीय तकनीकी सत्र में मंती धुर्वे लोक कलाकार ने बैगा जनजाति की जीवन शैली पर मधुर गीत प्रस्तुत किया। साथ ही अन्य कलाकारों ने मांदर की थाप दी। श्री जेहर सिंह ओदरिया ने बैगा संस्कार पर विस्तृत प्रकाश डाला। अध्यक्षता कर रहे डॉ. विजय चौरसिया ने बैगा जीवन शैली के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए।

तृतीय तकनीकी सत्र
श्री जेहर सिंह ओदरिया ने बैगा संस्कार पर विस्तृत प्रकाश डाला

दो दिवसीय बैगानी भाषा सम्मेलन (समापन सत्र)

दिनांक : 24.08.2024

चतुर्थ सत्र का विषय - बैगा संस्कृति पर आधारित रहा। इसमें श्री राकेश चंदेल द्वारा बैगा संस्कृति के इतिहास पर आलेख पाठ किया गया। जिसमें उन्होंन बैगा संस्कृति में आधुनिक सभ्यता का प्रभाव नहीं पड़ा है। वे आज भी प्राचीन परंपरा के अनुसार जीवनयापन करते है। वे अपने देव के रूप में जल ओर ब्रम्हा को मानते है। वहीं श्री साधु राम झुमुड़िया द्वारा बैगा मान्यताओं एवं वेशभूषा की वृहद जानकारी दी। इस क्रम में श्री गोपीकृष्ण सोनी के द्वारा बैगा पर्व एवं त्यौहार सरहुल, दीवाली, फागून के त्यौहार पर महत्वपूर्ण जानकारी मंच से साझा किया। अध्यक्षीय उद्बोधन श्रीमती शिखा पाटीदार ने प्रस्तुत किया।

पंचम सत्र बैगानी लोक साहित्य पर केंद्रित रहा। जिसमें आलेख पाठ श्री विजय चौरसिया के द्वारा बैगानी के वाचिक महाकाव्य पर केंद्रित उद्बोधन रहा। इसके पश्चात श्री दयाराम राठुडिया के द्वारा बैगा लोकगीत प्रस्तुत किया गया। जिसमें बैगा संस्कृति की झलक देखने को मिली। अगले क्रम में सुश्री स्वाति

आनंद के द्वारा बैगा जनजाति की गोदना परंपरा पर शोधपत्र प्रस्तुत किया। वहीं अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री धर्मेंद्र पारे के द्वारा बैगा जनजाति की विशिष्टताओं को बताते हुए उन्हें औषधीय ज्ञान का संरक्षक माना। एवं उनके जीवन शैली से हमें सीखना चाहिए पर बल दिया।

छठें सत्र में सर्वप्रथम श्रीमती शिखा पाटीदार के द्वारा आलेख पाठ किया गया। जिसमें द उन्होंने बैगा जनजाति के पर्यावरण के संरक्षण को विशेष रूप से रेखांकित किया। इसके पश्चात श्री झामलाल रशिया के द्वारा बैगा जनजाति के गोदना कला पर अपना वक्तव्य दिया। जिसमें गोदना का स्वास्थ्य से संबंध होने की जानकारी दी गई। अगले क्रम में श्री लाखन लाल ओदरिया द्वारा बैगा लोककला पर विस्तार से चर्चा की। प्रो. जितेन्द्र कुमार प्रेमी ने गोदना को अंधविश्वास और वैज्ञानिक आधार बाताया गया। उन्होंने कहा कि महिलाएँ शरीर के सभी अंग में गोदना गोदवाती है उनका विश्वास है कि यदि जीते–जी गोदना न गोदवाएँ तो मरने पर गोदना गोद दी जाती है। अध्यक्षीय उद्बोधन श्री राकेश चंदेल द्वारा प्रस्तुत किया गया।

सातवाँ सत्र का विषय बैगानी कवि सम्मेलन था इसमें अध्यक्षता श्री मोतीराम कचनरिया ने किया सर्वप्रथम काव्यपाठ मंती धुर्वे ने पारंपरिक गीत घोड़ा लागाम खाएँ गीत गाकर बच्चों के खेल का वर्णन किया। इसमें बच्चें गोलाकृति में बैठे रहते है और दाम देने वाला गमछे की कुडडी लेकर गोला के चारो ओर दौडता है और किसी बच्चें के पीठ की तरफ कुडडी छोड़ देता है। बच्चा देख ले तो दाम देता है नहीं तो मार खाता है। दूसरा गीत उन्होंने सुनाया

दहरा दहरा पानी, गोल गोल रानी।

कन्हिा कन्हिा पानी, गोल गोल रानी।।

श्री चैनसिंह सुरखिया ने जीवन के रहस्य को बच्चों के गीत

अटकन–बटकन दही चटाकन

लउहा लाटा बन में काटा।।

सावन में करेला पाके

चल–चल बेटी गंगा जाबो।।

धनीराम कडमिया और उसके साथी ने बैगानी पारंपरिक गीत सुनाएँ।

कार्यक्रम का अंतिम सत्र् **समापन के अवसर पर** धन्यवाद ज्ञापन का था। इस सत्र् में डॉ. **एन. सुरेश बाबू ने** एक हाथ में गुलदस्था लेकर उदाहरण देते बताया कि जो फूल कल अविकसित थे वे सभी आज विकसित हो गये है। इस दो दिवसीय कार्यक्रम के सफल होने में पूरा श्रेय पद्मश्री अर्जुन सिंह धुर्वे और उनके पुरे बैगा परिवार को जाता है। उनकी गरिमामय उपस्थिति से यह कार्यक्रम सफल हुआ है। इस कार्यक्रम को सफलता पूर्वक आयोजित करने का सारे श्रेय प्रो. सच्चिदानंद शुक्ल, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर एवं अर्थशास्त्र अध्ययनशाला के अध्यक्ष प्रो. रविन्द्र ब्रम्हे, प्रो. बी.एल. सोनेकर, डॉ. सुनील कुमेटी एवं **साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला के अध्यक्ष प्रो.शैल शर्मा, डॉ. गिरजा शंकर गौतम, डॉ. स्मिता शर्मा एवं अन्य प्राध्यापकगण तथा विश्वविद्यालय के अन्य अध्ययनशालाओं के प्राध्यापक, शोधार्थी, विद्यार्थी** को जाता है। उन्होंने विश्वविद्यालय परिवार के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

रविवि में बैगानी भाषा की गूंज, सम्मेलन में संस्कृति का संगम

रायपुर @ पत्रिका. बैगा जनजाति के संरक्षक धर्मेंद्र पारे की अध्यक्षता में हुए बैगानी भाषा सम्मेलन का समापन रविवि में हुआ। इस सम्मेलन में बैगा जनजाति की संस्कृति, जीवनशैली, लोक साहित्य और कला पर केंद्रित कई सत्र हुए। एक सत्र में दुलार योताम कल्लू ने बैगा जनजाति के पारिवारिक गीतों पर बात की, जबकि लहरी बाई ने उनके खान-पान पर प्रकाश डाला। जेहर सिंह ओदरिया ने बैगा जनजाति के संस्कारों के बारे में विस्तार से बताया। एक अन्य सत्र में राकेश चंदेल ने बैगा संस्कृति के इतिहास पर आलेख प्रस्तुत किया, जबकि साधु राम जमोरिया ने बैगा मान्यताओं और वेशभूषा के बारे में जानकारी दी। गोपी कृष्ण सोनी ने बैगा पर्व और त्योहारों पर महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। सम्मेलन के अंत में साहित्य अकादमी के उप सचिव एन सुरेश बाबू ने भाषा, साहित्य और संस्कृति के महत्व पर प्रकाश डाला और सभी अतिथियों और आयोजकों को धन्यवाद दिया।

समापन सत्र

श्री एन. सुरेश बाबू , उपसचिव, साहित्य अकादेमी

18. एक दिवसीय व्याख्यान

दिनांक– 16.08.2024

साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला के पाणिनि सभागाार में दिनांक 16.08.2024 को एक दिवसीय व्याख्यान का आयोजन किया गया। अतिथि वक्ता प्रो. गीता नायक, वरिष्ठ भाषाविद् एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, पूर्व निदेशक, भारत अध्ययन केन्द्र विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) ने 'अवाचिक संप्रेषण' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया चेहरे की मुद्रा हमारे भावो को व्यक्त करते है। अनकाहा को समझना ही अवाचिक परंपरा है। वक्ता ने अवाचिक संप्रेषण के विविध प्रकार का विस्तार पूर्वक वर्णन किया। उन्होंने बताया कि हम दैनिक जीवन में आंगीक संप्रेषण के माध्यम से भी अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। मुख के हाव–भाव भी मन के भाव को व्यक्त करते हैं। हमारी आँखे, ओष्ठ, हाथ–पैर इत्यादि अवाचिक संप्रेषण के माध्यम हैं। उन्होंने पश्चात्य दृष्टि, सांस्कृतिक परंपरा पर प्रकाश डाल कर विधर्थियो को नई दृष्टि प्रदान की।

इस कार्यक्रम में अध्यक्ष प्रो. शैल शर्मा, डॉ. मधुलता बारा, डॉ. गिरजा शंकर गौतम, डॉ. स्मिता शर्मा, समस्त शिक्षकगण, शोधार्थीगण एवं छात्र–छात्राएँ उपस्थित रहें। मंच संचालन डॉ.गिरजा शंकर गौतम एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रो. शैल शर्मा ने किया।

प्रो. गीता नायक, उज्जैन **2024-25**

19. दीक्षारंभ

दिनांक– 05.08.2024

साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला के पाणिनि सभागार में दिनांक 05.08.2024 को नवप्रवेशित विद्यार्थियों का दीक्षारंभ कार्यक्रम प्रातः 09:00 बजे आयोजित किया गया। उक्त कार्यक्रम में सर्वप्रथम विद्यार्थियों का स्वागत तीलक लगाकर एवं पुष्प वर्षा से किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत अध्यक्ष प्रो. शैल शर्मा साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला के स्वागत उद्बोधन से हुआ। उन्होंने विभाग में संचालित विभिन्न पाठ्यक्रम से छात्रों को अवगत कराया। साथ ही विभाग में आयोजित होने वाले विविध साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी दी सभी छात्रों की सहभागिता प्रोत्साहित किया गया।

डॉ.मधुलता बारा ने नवप्रवेशित विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें अनुशासन की सीख दी एवं जीवन में निरंतर गतिशील होकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति करते रहने की बात कही।

डॉ. मृणालिनी करमोकर, डॉ. सोनल मिश्रा, डॉ. कुमुदिनी घृतलहरे, डॉ. विभाषा मिश्र, डॉ. बरातू राम ध्रुव, डॉ. शारदा सिंह एवं विभाग के शोधार्थी शुभांक्षी पाण्डेय व ओंकार प्रसाद साहू ने अपने वक्तव्य से विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। साथ ही साथ तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने भी नए विधार्थियों का स्वागत एवं उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम के अंत में आभार वक्तव्य डॉ. मधुलता बारा ने किया। उक्त कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विद्यार्थी एवं शोधार्थी उपस्थित रहे।

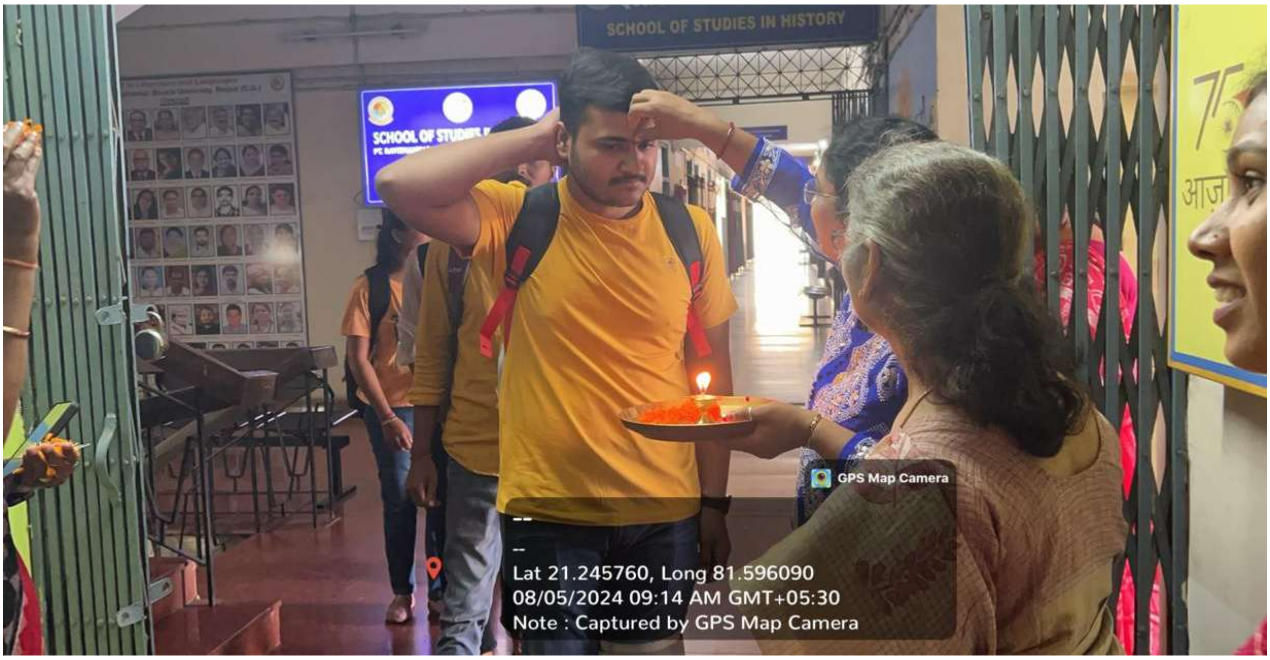

DEEKSHARAMBH
दीक्षारंभ
STUDENT INDUCTION PROGRAM
GPS Map Camera
Lat 21.245615, Long 81.596009
08/05/2024 09:23 AM GMT+05:30
Note : Captured by GPS Map Camera

पं. सुन्दरलाल शर्मा ग्रंथागार
GPS Map Camera
Lat 21.244888, Long 81.595158
08/05/2024 10:23 AM GMT+05:30
Note : Captured by GPS Map Camera

20. भारतीय शिक्षा प्रणाली : अपेक्षा एवं चुनौतियाँ (व्याख्यान)

दिनांक– 15.07.2024

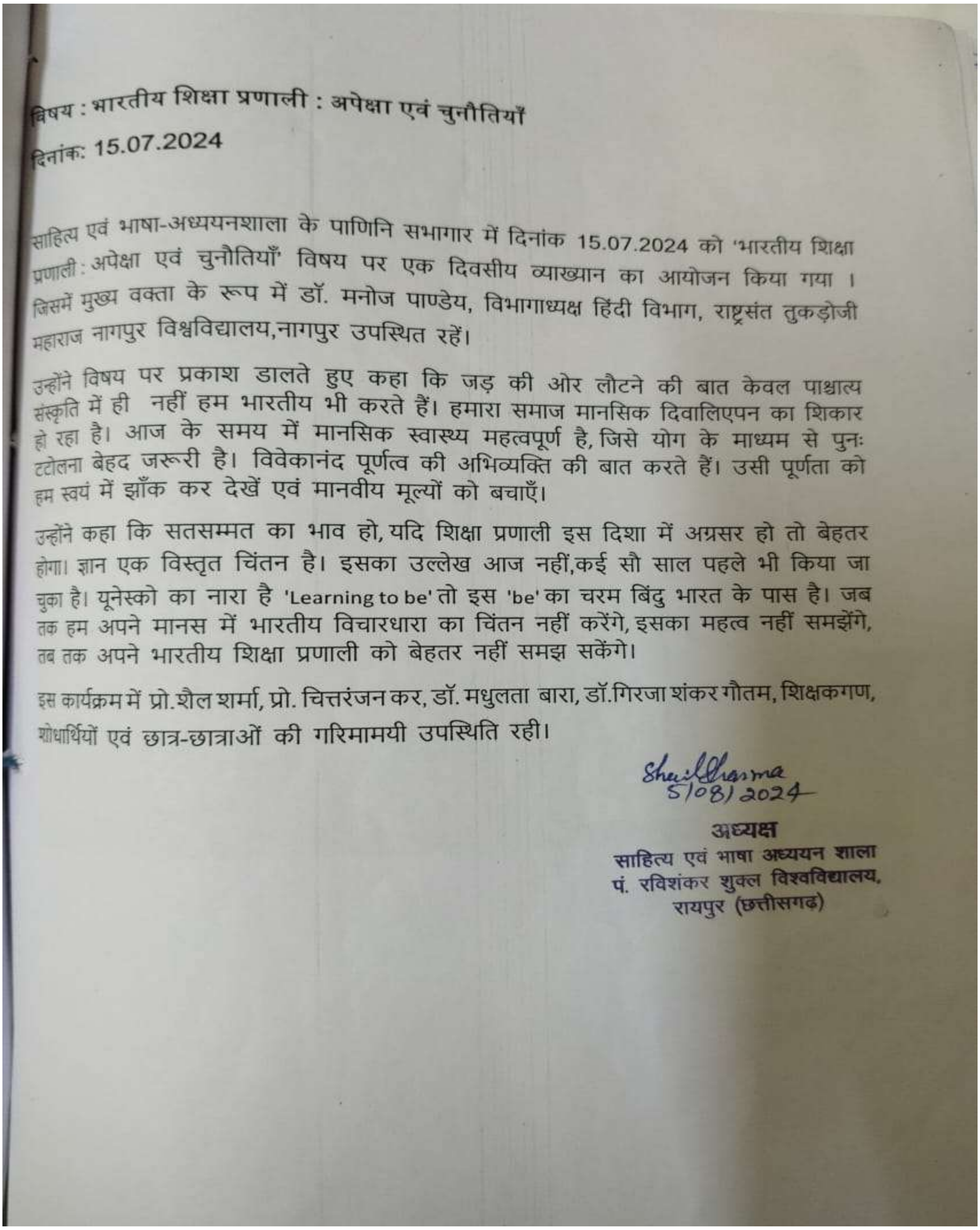

विषय : भारतीय शिक्षा प्रणाली : अपेक्षा एवं चुनौतियाँ

दिनांक: 15.07.2024

साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला के पाणिनि सभागार में दिनांक 15.07.2024 को 'भारतीय शिक्षा प्रणाली : अपेक्षा एवं चुनौतियाँ' विषय पर एक दिवसीय व्याख्यान का आयोजन किया गया । जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. मनोज पाण्डेय, विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय,नागपुर उपस्थित रहें।

उन्होंने विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जड़ की ओर लौटने की बात केवल पाश्चात्य संस्कृति में ही नहीं हम भारतीय भी करते हैं। हमारा समाज मानसिक दिवालिएपन का शिकार हो रहा है। आज के समय में मानसिक स्वास्थ्य महत्वपूर्ण है, जिसे योग के माध्यम से पुनः टटोलना बेहद जरूरी है। विवेकानंद पूर्णत्व की अभिव्यक्ति की बात करते हैं। उसी पूर्णता को हम स्वयं में झाँक कर देखें एवं मानवीय मूल्यों को बचाएँ।

उन्होंने कहा कि सतसम्मत का भाव हो, यदि शिक्षा प्रणाली इस दिशा में अग्रसर हो तो बेहतर होगा। ज्ञान एक विस्तृत चिंतन है। इसका उल्लेख आज नहीं,कई सौ साल पहले भी किया जा चुका है। यूनेस्को का नारा है 'Learning to be' तो इस 'be' का चरम बिंदु भारत के पास है। जब तक हम अपने मानस में भारतीय विचारधारा का चिंतन नहीं करेंगे, इसका महत्व नहीं समझेंगे, तब तक अपने भारतीय शिक्षा प्रणाली को बेहतर नहीं समझ सकेंगे।

इस कार्यक्रम में प्रो. शैल शर्मा, प्रो. चित्तरंजन कर, डॉ. मधुलता बारा, डॉ.गिरजा शंकर गौतम, शिक्षकगण, शोधार्थियों एवं छात्र-छात्राओं की गरिमामयी उपस्थिति रही।

Shail Sharma
5/08/2024

अध्यक्ष
साहित्य एवं भाषा अध्ययन शाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर (छत्तीसगढ)

प्रो. मनोज पाण्डेय को स्मृति चिन्ह भेट करते हुए प्रो. शैल शर्मा

प्रो. चित्तरंजन कर

डॉ. मनोज पाण्डेय, नागपुर

21. दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (विषय– राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः चुनौतियाँ, समाधान एवं भारतीय भाषा विशेषकर सिंधी के महत्व का योगदान दिनांक– 6–7 जुलाई 2024

सिंधी भाषा के विकास पर दो दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ

नई शिक्षा नीति के अंतर्गत मातृभाषा संवर्धन संरक्षण एवं अध्ययन के लिए सरकारी योजनाओं का उपयोग कैसे करें विषय पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। मुख्य अतिथि शदाणी दरबार के संत युधिष्ठिरलाल थे। विशेष अतिथि राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद नई दिल्ली के निदेशक प्रो. रवि प्रकाश टेकचंदानी, कुलपति सच्चिदानंद शुक्ला एवं सच्चिदानंद जोशी आदि उपस्थित रहे।

नई दिल्ली से आए रवि प्रकाश टेकचंदानी ने कहा कि पिछले चार वर्षों में डिप्लोमा इन सिंधी कोर्स कराया गया। इस वर्ष से एमए इन सिंधी का कोर्स प्रारंभ हुआ है।

शदाणी दरबार के संत युधिष्ठिरलाल सिंधी भाषा के विकास पर विचार रखते। ● शदाणी दरबार

जिये सिंधियत

BHARATIYA SHIKSHA MANDAL CHHATTISGARH PRANT

&

PT. RAVISHANKAR SHUKLA UNIVERSITY, RAIPUR (C.G.)

06 JULY 2024

INAUGURAL SESSION

09 to 10.30am at PRSU Auditorium

SINDHI BHASHA SESSION

राष्ट्रीय शिक्षा निति सां सिंधी भाषा जो बहुआयामी वाधारो कियें थे

12 to 1.30pm at Kala Bhawan, PRSU

CULTURAL EVENT

07 to 09pm at PRSU Auditorium

सिंधियत जी शान वधायण लाये सभिनि प्रोग्रामन् में ज़रूर शामिल थींदा

Contact :

Prof. TC Mohnani - 90399 82023 & Murli Batra - 91313 17747

मंझद ऐं रात जी मानी (रसोई) गड्‌ कंदासी।

उद्घाटन सत्र
राष्ट्रीय संगोष्ठी
'राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः चुनौतियाँ, समाधान एवं भारतीय भाषा विशेषकर सिंधी के महत्त्व का योगदान'
संयुक्त तत्वावधान
दिनांकः-06 से 07 जुलाई 2024
भारतीय शिक्षण मंडल
एवं
संत शदाराम साहिब सिंधी अध्ययन केंद्र,
पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर

दिनांकः-06 से 07 जुलाई 2024

GPS Map Camera
Raipur, Chhattisgarh, India
6HWW+8F8, Amanaka, Raipur, Chhattisgarh 492010, India
Lat 21.245558°
Long 81.596274°
06/07/24 12:36 PM GMT +05:30
Google

भारतीय शिक्षा मण्डल एवं
संत शदाराम साहिब सिंधी अध्ययन
व्याख्यानमाला 06 जुल
राष्ट्रीय संगोष्ठी
'राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः चुनौतियाँ, समाधान एवं भारत
विशेषकर सिंधी के महत्त्व का योगदान'
व्याख्यानमाला
दिनांक-06 से 07 जुलाई 2024
संत शदाराम साहिब
पं.रविशंकर शुक्ल

भारतीय शिक्षा मण्डल एवं पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
संत शदाराम साहिब सिंधी अध्ययन केन्द्र, रायपुर
व्याख्यानमाला 06 जुलाई 2024
राष्ट्रीय संगोष्ठी
राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः चुनौतियाँ समाधान एवं भारतीय भाषा विशेषकर सिंधी के महत्त्व का योगदान
व्याख्यानमाला
दिनांक-06-07 जुलाई 2024
भारतीय शिक्षण मंडल एवं
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
सिंधी अध्ययन केंद्र,
GPS Map Camera
Raipur, Chhattisgarh, India
6HWW+8F8, Amanaka, Raipur, Chhattisgarh 492010, India
Lat 21.24554°
Long 81.596278°
06/07/24 12:35 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera
Raipur, Chhattisgarh, India
6HWW+8F8, Amanaka, Raipur, Chhattisgarh 492010, India
Lat 21.24554°
Long 81.596295°
06/07/24 12:46 PM GMT +05:30
Google